औपनिवेषिक उत्तर भारत में स्त्री चेतनाः

''स्त्री दर्पण पत्रिका के विषेष संदर्भ में''

प्रस्तावना :

बीसवीं सदी का आरंभिक दषक पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाषन का प्रारंभिक दौर था। इस कार्य को उस समय नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी माना जाता था। उस दौर के अनेक बुद्धिजीवियों ने पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से राष्ट्रवाद से लेकर सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक मुद्दों को उठाया। पत्रिकाओं में जो सामाजिक मुद्दे उठाये गये उनमें महिलाओं की समस्याएं प्रमुख थी। स्त्रियों की समस्याओं से संबंधित प्रमुख पत्र– पत्रिकाएं सरस्वती, गृहलक्ष्मी, आर्यमहिला, चांद आदि थी। इन्ही पत्रिकाओं के क्रम में सबसे महत्वपूर्ण पत्रिका स्त्री दर्पण थी। जिसको 1909 में रामेष्वरी नेहरू ने शुरू किया था। इस पत्रिका की सबसे बड़ी खासियत महिलाओं के मुद्दों को महिलाओं द्वारा उठाया जाना था। चूंकि इस पत्रिका के प्रकाषन के पहले व बाद में भी अधिकांष पत्रिकाओं का संपादन पुरूषों ने ही किया, इसलिए यह पत्रिका और भी महत्वपूर्ण है। स्त्री दर्पण पत्रिका एकमात्र ऐसी पत्रिका रही जिसका संपादन एक महिला ने महिलाओं के हित में किया।

स्त्री दर्पण पत्रिका के प्रत्येक अंक में नाटक, कहानियां, कविताएं व पुस्तक समीक्षाएं होती थी। सभी कहानी व कविताएं समाजिक बुराइयों को ध्यान में रखकर लिखी जाती थी। इसमें महिलाओं की समस्याएं प्रमुखता से उठायी जाती थी। बाल विवाह, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह प्रतिबंध, पुरूषों द्वारा महिलाओं का शोषण तथा महिलाओं की षिक्षा से संबंधित मुद्दे को प्रमुखता से उठाया जाता था। पर्दा प्रथा के बारे में श्रीमती सत्यवती ने 'स्त्रियां और पर्दा' नाम से एक लेख लिखा जिसमें इन्होंने पर्दा प्रथा को प्राचीन भारतीय प्रथा न मानकर मध्यकाल में अन्य संस्कृतियों से आया माना। इसके अलावा श्रीमती सौभाग्यवती ने पर्दा प्रथा के इतिहास पर 'आधुनिक पर्दा प्रणाली तथा उससे हानियां' तथा हुक्मा देवी ने 'स्त्री उन्नति कैसे हो' शीर्षक से एक लेख लिखा। इसी तरह के अन्य लेख भी इस पत्रिका में लगातार प्रकाषित होते रहे। महिलाओं की समस्याओं के अलावा इस पत्रिका में राष्ट्र के प्रति सजग जिम्मेदारी के लिए भी कई लेख प्रकाषित हुए। अक्टूबर 1917 में 'स्त्रियां और स्वराज' नामक शीर्षक से एक लेख छपा जिसमें महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए कहा गया था। स्त्री दर्पण पत्रिका अपनी शुरूआती दौर से ही महिलाओं के हक के लिए हमेषा तत्तपर रही और साथ ही साथ उस समय के अनेक सामाजिक मुद्दों को भी प्रमुखता से उजागर किया।

उपकल्पनाः

पत्र–पत्रिकाएं समाज में जागरूकता फैलाने का महत्वपूर्ण माध्यम होती हैं। स्त्री दर्पण पत्रिका का स्त्री चेतना के विकास में क्या योगदान है तथा तत्कालीन समाज में किस प्रकार इस पत्रिका ने स्त्रियों की समस्याओं से लोगों को जागरूक किया।

अंतर विषयक प्रासंगिकता

पत्र–पत्रिकाएं बहुआयामी उद्ष्यों से प्रेरित होती है जो कि अपने अंदर विभिन्न अनुषासनों को समेटे रखती हैं, जो कि एक बड़े सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन को प्रेरित करने का कार्य करती हैं, जिसमें स्त्री दर्पण पत्रिका अपने प्रकाषन में इन सभी को समेटे हुए जनचेतना व जन जागरण का माध्यम बनी हुई थी। यह लघु षोध एक पत्रिका पर आधारित है इसलिए इसका जनसंचार विशय में भी योगदान हो सकता है।

शोध विषय की अंतरराष्ट्रीय स्थितिः

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फ्रंचेस्का ओरसीनी ने इस पत्रिका के संदर्भ में कार्य किया है। इनकी पुस्तक ष्ठमवितम जीम कपअपकमरू भ्पदकप ंदक न्तकन सपजमतंतल बनसजनतमष् है। राष्ट्रीय स्तर पर कमलेष मोहन, शोबना निझावन ने इससे संबंधित कार्य किया है।

उद्देष्यः

औपनिवेषिक उत्तर भारत में स्त्रियों की समस्याओं और उनके समाधान को प्रस्तुत करती तथा राष्ट्रवादी चेतना का स्त्रियों में विकास करने वाली व बड़े सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन की ओर अग्रसर करने वाली स्त्री दर्पण पत्रिका का योगदान संपूर्ण विष्लेषण व विवेचन से ही संभव है। इस लघु षोध के माध्यम से स्त्री दपर्ण पत्रिका में प्रकाषित लेखों को नारीवादी नजरिए से देखना और उसका विष्लेशण करना है।

शोध प्रविधिः

इस लघु शोध प्रबंध को पूरा करने के लिए प्राथमिक व द्वितियक स्रोतों का सहारा लिया जायेगा। शोध से संबंधित पत्र–पत्रिकाओं का नारीवादी शोध प्रविधि के दृष्टिकोण से विष्लेषण करके शोध कार्य को पूरा किया जायेगा। प्रस्तावति शोध एक अंतरानुषासनिक विषय से आबद्ध है।

शोध की सीमा

प्रस्तावित लघु शोध प्रबंध की सीमा को विषयवस्तु तक सीमित रखने का प्रयास किया जायेगा।

संभावित अध्यायः

अध्याय - 1 : पत्रिकाओं में स्त्री की छवियां

1.1 राष्ट्रवादी विमर्श में पत्रिकाओं की भूमिका

1.2 मध्यमवर्गीय स्त्री व राष्ट्रवाद

1.3 हिंदी पब्लिक स्फियर में महिलाओं की भागीदारी

अध्याय -2 : गांधी की राजनीति और नारी

2.1 पत्रिकाओं के सम्पादकीय एवं पाठकों के पत्र

2.2 पत्रिकाओं के विभिन्न मुद्दे

अध्याय-3 : स्त्री विषयक पत्रिकायें

3.1 गृहलक्ष्मी व चाँद

3.2 स्त्री प्रश्नों पर विभिन्न पत्रिकाओं की प्रतिक्रिया

अध्याय -4 : 'स्त्री दर्पण' स्त्री प्रश्नों की मुखर अभिव्यक्ति के रूप में

4.1 स्त्री प्रश्न और स्त्री दर्पण

4.2 स्त्री शिक्षा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह

4.3 स्त्री दर्पण नैतिक शिक्षा के माध्यम के रूप में

संदर्भ ग्रंथः

सं. शाहिद अमीन, ज्ञानेंद्र पाण्डेय, निम्नवर्गीय प्रसंग, भाग–2, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, 2002

पं. रमाबाई, हिंदू स्त्री का जीवन, अनु. शंभू जोषी, संवाद प्रकाषन, मेरठ, 2006

तलवार, वीरभारत, राष्ट्रीय नवजागरण और साहित्य कुछ प्रसंगः कुछ प्रवृत्तियां, हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली, 1993

तलवार, वीरभारत, रस्साकषी, सारांष प्रकाषन, दिल्ली, 2006

पाण्डेय, भवदेव, बंग महिलाः नारीमुक्ति का संघर्ष, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली,1999

नाथ शंभु, सामाजिक क्रांति के दस्तावेज, भाग–1 और 2, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली, 2004

दीवान–ए– सराय, मीडिया विमर्ष, विकासषील अध्ययन

मालती के एन, स्त्री विमर्ष भारतीय परिपेक्ष्य, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली, 2010

Ed.Susie Tharu and k. Lalita, women writing in India, vol.1

Oxford university prees, New Delhi, 1991